'सुगमा' : वृत्तरत्नाकर की एक दुर्लभ संस्कृत-टीका

- राजीव कुमार'त्रिगर्ती©

rajeevtrigarti@gmail.com

सार-संक्षेप

पद्यों के निर्माण हेतु आवश्यक 'छन्द' का विवेचन और विश्लेषण प्रायः वैदिक-काल से होता रहा है। लौकिक संस्कृत-साहित्य में छन्दोविवेचन का तो क्रमिक तथा धारावाहिक इतिहास उपलब्ध होता है। आचार्य पिंगल से लगायत वर्तमान सदी तक छन्दोविवेचन की परम्परा अक्षुण्ण चली आ रही है। केदार भट्ट रचित वृत्तरत्नाकर छन्दःशास्त्र का एक लोकप्रिय ग्रन्थ है जिस पर सम्भवतः सबसे अधिक टीकाएं भी की गईं। इन टीकाओं की इदमित्थं संख्या आज भी अज्ञात है। प्रस्तुत शोधपत्र में वृत्तरत्नाकर की एक ऐसी ही दुर्लभ तथा अज्ञात-प्राय टीका का परिचय एवं विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

की-वर्ड्स - छन्दः, छन्दःशास्त्र, आचार्य पिंगल, वृत्तरत्नाकर, केदार भट्ट, वृत्तरत्नाकर-सुगमा-टीका, चन्द्रमणि शर्मा.

संस्कृत साहित्य में छन्दःशास्त्र का अपना एक विशिष्ट स्थान है। वैदिक साहित्य को समझने के लिए छन्दःशास्त्र का ज्ञान होना जितना आवश्यक है वैसे ही लौकिक-संस्कृत के लिए भी छन्दःशास्त्र का महत्त्व सर्वविदित है। पाणिनीय शिक्षा में 'छन्दः पादौ तु वेदस्य' कहकर वेदरूपी पुरुष के पैरों का स्थान छन्द को दिया है। इससे स्पष्ट है कि वेद की गति का मूल आधार छन्द ही है। वेदों में प्रमुख रूप से सात छन्दों का प्रयोग मिलता है। ये सात छन्द इस प्रकार हैं - गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती। वेदों की अपेक्षा लौकिक-संस्कृत में छन्दों का प्रयोग अत्यधिक हुआ है।

छन्दःशास्त्र के उपलब्ध इतिहास में आचार्य पिंगल द्वारा प्रणीत 'छन्दःसूत्र' ही आद्य ग्रन्थ के रूप में स्वीकृत है जबकि नाट्यशास्त्र का अध्याय 14-15 और अग्निपुराण का एक खण्ड छन्दों के विषय में है। ये रचनाएं छन्दःसूत्र के बाद की हैं। छन्दःशास्त्र पर 'श्रुतबोध' नाम का ग्रन्थ है जिसके रचयिता के रूप में कालिदास का नाम लिया जाता है। हालांकि इस सन्दर्भ में कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं होते। इस क्रम में हेमचन्द्र का 'छन्दोऽनुशासन', क्षेमेन्द्र का 'सुवृत्ततिलक', गंगादास कृत 'छन्दोमंजरी' तथा केदारभट्ट विरचित 'वृत्तरत्नाकर' महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

छन्दोविधान को लेकर रचा गया 'वृत्तरत्नाकर' एक उपयोगी ग्रन्थ है। इसके रचनाकार केदारभट्ट हैं। इनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। 'वृत्तरत्नाकर' का रचनाकाल पन्द्रहवीं शताब्दी को स्वीकार किया जाता है। छन्दोविवेचनन की दृष्टि से यह पौढ रचना है। छः अध्यायों में निबद्ध इस ग्रन्थ में 136

© ग्राम-लंघू, पोस्ट-गाँधीग्राम, वाया-बैजनाथ, जिला-काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश, भारत.

श्लोक हैं। 'वृत्तरत्नाकर' में छन्द के लक्षण रूप में प्रयुक्त पंक्ति छन्द के उदाहरण रूप में भी घटित हो जाती है, यह इस ग्रन्थ की एक विशेषता है।

अधिक उपयोगी होने के कारण इस पर अनेक टीकाएं लिखी गयीं। इस पर प्राचीन चौदह टीकाएं उपलब्ध हैं जिनमें से नारायणी टीका को ज्ञानवर्धन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना गया है। इस पर टीकाएं लिखने का क्रम आज भी चल रहा है।

टीकाकार – पण्डित चन्द्रमणि शर्मा

अर्वाचीन अनेक टीकाओं में एक टीका है 'सुगमा'। इसके टीकाकार हैं पण्डित चन्द्रमणि उपाध्याय। सुगमा व्याख्या के साथ-साथ इन्होंने हिन्दी में भी भाषाटीका के माध्यम से छन्दों के लक्षणों के सुगमता से अववोधन हेतु प्रयास किया है। इनकी इस हिन्दी भाषाटीका का नाम 'सरला' है। इनकी यह टीका विषम स्थलों पर विशिष्ट टिप्पणियों से समलंकृत है। वृत्तरत्नाकर मूलरूप में ही है और इसमें उदाहरणों के रूप में श्लोकों का सन्निवेश नहीं किया गया है। सरला भाषाटीका के साथ सुगमा टीका हालांकि प्रकाशित अवस्था में उपलब्ध होती है परन्तु प्रतियाँ उपलब्ध न होने के कारण आज के समय में इसे दुर्लभ टीका के रूप में ही देखा जा सकता है।

इसकी एक मात्र प्रति चामुण्डानन्दिकेश्वर-धाम, हिमाचल प्रदेश के पुस्तकालय में प्राप्त हुई है। यह पुस्तक 1937 में भारद्वाज पुस्तकालय, हस्पताल रोड, लाहौर से प्रकाशित हुई। यह इसका प्रथम संस्करण था। ओरियन्टल विद्यालय लाहौर में दर्शन के तत्कालीन अध्यापक व्याकरणतीर्थ पण्डित जगदीशभट्ट शास्त्री ने इसका संशोधन किया तथा भूमिका भी लिखी। सुगमा नामक टीका विद्यार्थियों के हित के लिए लिखी गयी थी। इसका उल्लेख पुस्तक की भूमिका में जगदीशभट्ट शास्त्री द्वारा किया गया है। छात्रों के उपयोगार्थ सुगमा और सरला टीकाओं का प्रकाशन के सन्दर्भ में इनकी अन्य पुस्तकों में भी उल्लेख मिलता है। 'संस्कारसूर्योदयः तृतीयभाग' (पिछला आवरण पृष्ठ), 'सर्वव्रतोद्यापनचन्द्रिका' (पृष्ठ 211), 'चातुवार्षिक-एकोदिष्टश्राद्धपद्धतिः'(पिछला आवरण पृष्ठ) पुस्तकों में प्रचार के रूप में इस प्रकार उल्लेख है-

"निम्नलिखित छात्रोपयोगी संस्कृत हिन्दी सरल टीका टिप्पणी सहित प्रश्नोत्तररूप गुटका सजिल्द छात्रों से" - लिखकर नीचे वृत्तरत्नाकर और तर्क-संग्रह लिखा है। स्पष्ट है कि इन्होंने तर्क-संग्रह और वृत्तरत्नाकर दोनों ग्रन्थों की टीकाएं लिखी हैं जिनमें से तर्क-संग्रह की टीका अब तक उपलब्ध नहीं हुई है। पुस्तक के टीकाकार ने वृत्तरत्नाकर के रचयिता के देश और काल का परिचय भी संक्षेप में प्रस्तुत किया है। इस क्रम में वे केदारभट्ट को कश्मीर का निवासी मानते हैं। इनके अनुसार – "इनके ग्रन्थ से ही प्रतीत होता है कि ये काश्मीर देश के निवासी थे। क्योंकि ग्रन्थारम्भ में इन्होंने अपने पिता को शैवशास्त्रों का वेत्ता लिखा है और शैवशास्त्रों का उद्गम स्थान काश्मीर ही है।" काल के सन्दर्भ में चन्द्रमणि उपाध्याय लिखते हैं – "अभिनव गुप्ताचार्य विक्रमी संवत् 1071 के लगभग हुए हैं सो केदार इनके अनन्तर और मल्लिनाथ से पूर्व हुए हैं। जिससे इनका जन्मकाल अनुमानतः विक्रमी संवत् 1100 के लगभग प्रतीत होता है।"

जहाँ तक टीकाकार का प्रश्न है, बहुमुखी प्रतिभा के धनी पण्डित चन्द्रमणि शर्मोपाध्याय का जन्म हि. प्र. के काँगड़ा जिले के बैजनाथ क्षेत्र के लंघू गाँव में कौण्डिन्य गौत्रीय उपाध्याय परिवार में बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ। इनके जन्म के समय यह क्षेत्र अविभाहजत पंजाब का अंग था। इनके पिता का नाम पं. पूर्णभद्र तथा माता का नाम सावित्री देवी था। पिता संस्कृत तथा कर्मकाण्ड के विद्वान थे। इनके ताया पं. सोमदत्त उपाध्याय काशी से षड्शास्त्र निष्णान्त थे तथा धर्मशास्त्रों का प्रवचन करने वाले थे। इनके दूसरे ताया पं. शेषराम भी कर्मकाण्ड में कुशल थे। अतः इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर के ही विद्वानों के बीच प्रारम्भ हुई। इनकी यह प्रारम्भिक शिक्षा घर की परम्पराओं के अनुकूल वेदों, धर्मशास्त्रों, पुराणों तथा कर्मकाण्ड पर ही आधारित थी। विलक्षण प्रतिभा के कारण बालक चन्द्रमणि ने शीघ्र ही कुल परम्परानुसार प्रचलित ज्ञान को आत्मसात कर लिया। व्याकरण और ज्योतिष का प्रारम्भिक ज्ञान भी इन्होंने पं. सोमदत्तजी से ही प्राप्त किया। बाल्यावस्था में ही बैजनाथ के तारापुर में निवास करने वाले स्वामी तारानन्दजी के सम्पर्क में आ गए। उनकी विद्वता तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का इनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

स्वामी तारानन्दजी द्वारा स्थापित की गई श्रीजयचन्द्रतारिणी संस्कृत पाठशाला बनूरी में प्राज्ञ कक्षा में अध्ययन करते हुए ज्ञानपिपासु चन्द्रमणि ने इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक विद्वद्वर पं. गुरुभक्त अवस्थी जी के शिष्यत्व में अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया तथा प्राज्ञ-रत्न की उपाधि भी प्राप्त की। इन्होंने पं. सोमदत्त उपाध्याय तथा पं. गुरुभक्त शर्मा अवस्थी को अपना शिक्षा-गुरु स्वीकार किया है। संभवतः पं. सोमदत्त ही इनके दीक्षा-गुरु भी थे।

विशारद कक्षा में अध्ययन हेतु कुछ काल तक अमृतसर में भी रहे परन्तु कुछ परिस्थितियों के कारण इस अध्ययन को पूर्ण न कर सके तथा इन्हें घर लौटना पड़ा। कालान्तर में इन्होंने आयुर्वेद-भूषण तथा कर्मकाण्ड शिरोमणि (मन्त्र-शास्त्री) की उपाधियां भी प्राप्त कीं। घर आने पर आरम्भ में कर्मकाण्ड तथा ज्योतिष को ही इन्होंने अपनी आजीविका के लिए चुना।

कालान्तर में गंगावती नाम की कन्या से इनका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ। इस विवाह से इनकी दो संतानें एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुईं। कुछ समय के उपरान्त इनकी संतानों तथा पत्नी की भी मृत्यु हो गई। सन् 1934 में इनका द्वितीय विवाह हिमप्रभा (हीमा देवी) से हुआ। द्वितीय विवाह से भी इनकी दो संतानें एक पुत्र-यज्ञपति तथा एक पुत्री-ललिता उत्पन्न हुईं। पुत्र यज्ञपति का भी अकाल निधन हो जाने से इन्हें अपने गृहस्थ जीवन में इन्हें सदैव दुःखों का सामना करना पड़ा।

यज्ञानुष्ठान, षोडश-संस्कारों तथा अन्य कर्मकाण्डीय विधानों के सम्पादन में ये अत्यधिक निपुण थे। कर्मकाण्ड के साथ-साथ इन्होंने अध्यापन, लेखन तथा आयुर्वेदचिकित्सा-पद्धति में भी इनकी पारंगता सर्वविदित है। संस्कृत शिक्षा के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में भी इन्होंने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जिला मण्डी के भड़ोल गाँव में इन्होंने संस्कृत के स्थानीय विद्वानों के सहयोग से एक संस्कृत पाठशाला उद्घाटित की तथा उसमें लम्बे समय तक संस्कृत का अध्यापन करते रहे। बाद में इन्होंने बैजनाथ मन्दिर क्षेत्र में स्वामी तारानन्दजी द्वारा संस्कृत पाठशाला के रूप में स्थापित वेदशाला में भी अध्यापन किया। संवत् 1993 में पं. सोमदत्त जी के निधन के उपरान्त ही इन्होंने

यहाँ अध्यापन कार्य किया। व्याकरण, अलंकार-शास्त्र तथा विविध दार्शनिक ग्रन्थों के अध्यापन के साथ-साथ विद्यार्थियों को कर्मकाण्ड में भी पारङ्गत करवाते रहे।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी पं. चन्द्रमणि शर्मा ने समाज के तथा संस्कृत विद्या के सर्वाङ्गीण विकास के निमित्त इस वेदशाला में श्रीसोमचन्द्र पुस्तकालय की भी स्थापना की। स्वामी तारानन्दजी के निर्देशन में इस पुस्तकालय के माध्यम से इन्होंने संस्कृत-साहित्य और कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकों का प्रकाशन का काम भी किया। संवत् 1997 से इन्होंने वेदशाला के नाम से चलने वाली संस्कृत पाठशाला को हिन्दू महाविद्यालय, श्री तारामहामण्डल, बैजनाथ के रूप में परिवर्तित कर दिया। उस समय बैजनाथ जैसे क्षेत्र में शिक्षा की इतनी अच्छी व्यवस्था करके शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। स्वामी तारानन्द तीर्थ के सान्निध्य से तथा उनके प्रति अटूट विश्वास और श्रद्धा के कारण उनके मार्ग निर्देशन में इन्होंने महामाया तारा को इष्ट के रूप में स्वीकारा। भगवती की अनुकम्पा से इन्होंने इस छोटे से क्षेत्र में रहते हुए लेखन के क्षेत्र में जो अद्‌भुत और शोधपरक कार्य कर दिखाया वह आज के इस सर्वव्यवस्थासुलभ समय में भी कर पाना सरल नहीं है।

इनके द्वारा किया गया सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है काँगड़ा क्षेत्र के विशृंखलित कर्मकाण्डीय विधान को शृंखलाबद्ध करना। संवत् 1990 में इस कार्य के प्रथम चरण में इन्होंने पं. सोमदत्त उपाध्याय द्वारा संगृहीत 'संस्कार-सूर्योदयः (प्रथम भाग)' पर प्रकाशिका नाम से हिन्दी भाषा में टीका लिखकर लाहौर से छपवाया। इसमें लम्बे समय से संस्कारित न हो सकी पद्धति को ही संस्कारित किया गया था। यह सम्पूर्ण कार्य स्वामी तारानन्द जी के निर्देशन पर ही हो रहा था।

इसके बाद संवत् 1993 में पं. चन्द्रमणि जी ने 'श्राद्धेन्दु (तृतीय-भाग)' के अन्तर्गत 'चातुर्वार्षिकैकोदिष्ट-श्राद्धपद्धति' नामक पुस्तक प्रकाशित करवा दी। संवत् 1996 में इन्होंने 'सर्व-व्रतोद्यापनचन्द्रिका' नामक पुस्तक का प्रकाशन करवाया। इसमें व्रतोद्यापन से सम्बन्धित सामग्री तथा कर्मकाण्डीय विधान का हिन्दी टीका तथा विविध टिप्पणियों के साथ सुन्दर समायोजन किया गया है। संवत् 1998 में 'संस्कार-सूर्योदय (द्वितीय भाग)' नाम से पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें पूजा विधानों के साथ तेरह संस्कारों का यथाकाल विधान प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रन्थ अत्यधिक शोधपरक है तथा लेखक की कर्मकाण्ड के साथ-साथ विविध शास्त्रों में निष्णान्त होने को भी प्रमाणित करता है। इस पुस्तक के उपरान्त लेखक की 'श्राद्धेन्दु (प्रथम भाग)' नामक पुस्तक प्रकाश में आयी। इसका संवत् 1999 है। इसमें परलोक यात्रा से सम्बन्धित पंचदान, शवशृंगार, चितापिण्ड, चिताचयन, अग्निस्थापन, होम, दाह, शुद्धि, मुण्डन, कथाश्रवण आदि का सम्पूर्ण विधान कर्मकाण्डीय रीति द्वारा प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट में पुत्तालदाहादि शंकाओं का समाधान भी प्रस्तुत किया गया है।

पं. चन्द्रमणि शर्मोपाध्याय द्वारा संकलित 'संस्कार-सूर्योदय (तृतीय भाग)' नामक एक अन्य पुस्तक भी प्रकाशित हुई। संकलन के साथ-साथ इन्होंने इसकी भी प्रकाशिका नाम से हिन्दी में टीका लिखी। विवाह संस्कार से सम्बन्धित विभिन्न विधानों तथा मत-मतान्तरों को अनेक प्रमाणिक ग्रन्थों से संकलित करते हुए इसे एक श्रेष्ठ शोधग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत किया है। पं. चन्द्रमणि शर्मा कर्मकाण्ड लेखन के कार्य को विराम न देते हुए शोधात्मक प्रवृत्ति से इसे निरन्तर एक दिशा प्रदान करने में लगे रहे।

'सुगमा'-टीका : विश्लेषण

प्रस्तुत सुगमा टीका भी अनेक विशिष्टताओं से ओत-प्रोत है। समवृत्तप्रकरण नामक तृतीय अध्याय में उक्ता आदि जातियों के परिगणन में उनकी भेदसंख्या का उल्लेख भी किया है। यह भेदसंख्या इस प्रकार है-उक्ताजाति के 2, अत्युक्ताजाति के 4, मध्या के 8, प्रतिष्ठा के 16, सुप्रतिष्ठा के 32, गायत्री के 64, उष्णिक् के 128, अनुष्टुप् के 256, बृहती के 512, पंक्ति के 1024, त्रिष्टुप् के 2048, जगती के 4096, अतिजगती के 8192, शक्करी के 16384, अतिशक्करी के 32768, अष्टिजाति के 65536, अत्यष्टिजाति के 131072, धृति के 262144, अतिधृति के 5242288, कृति के 1048576, प्रकृति के 2097152, आकृति के 4194304, विकृति के 8388608, सङ्कृति के 16777216, अतिकृति के 33554432, उत्कृति के 67108864। प्रस्तुत जातियों के अन्तर्गत जिन छन्दों का प्रयोग हुआ है उनकी भेद संख्या का उल्लेख भी किया गया है। उदाहरण के लिए अत्यष्टिजाति के 131072 भेद हैं। इसके अन्तर्गत "रसैरुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी" लक्षण के उपरान्त सुगमा और सरला टीकाओं को देकर कोष्ठक में अत्यष्टिजाति के अन्तर्गत शिखरिणी का क्रम दिया है जो 59330 है। इस प्रकार समवृत्तप्रकरण में छब्बीस जातियों के अर्न्तगत प्रयुक्त समस्त छन्दों का भेदक्रम प्रस्तुत किया गया है।

उष्णिक्जाति के अन्तर्गत इन्होंने कुछ भेदों का परिगणन इस प्रकार किया है - 'सरगाः हंसमाला, चूडामणिस्तभागात्, तारासेविचन्द्रोम्यौग् -अन्यत्रोपलब्धानि भवन्ति।' 'प्रमाणिका जरौ लगौ' में प्रामाणिका के लक्षण के साथ विशेष टिप्पणी में इन्होंने '*नाराचिका* तरौ लगौ। *नागरक*ं भरौ लगौ। जौं गगौ च *सिंहलेखा*' नामक भेदों के लक्षण भी दिए हैं। वृहतीजाति के अन्तर्गत कुछ अन्य भेदों के लक्षण भी प्रस्तुत किए हैं - 'भद्रकेतिरनरैरियम्। समसैर्युक्ता रुक्मवती। कान्ता मो जरौ हिमप्रभा।'

छन्दोमञ्जरी की डा. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी द्वारा की गयी व्याख्या में उन्होंने विशेष टिप्पणियों में अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्दों के अनेक स्थलों पर लक्षण प्रस्तुत किए हैं। पं. चन्द्रमणि उपाध्याय ने वृत्तरत्नाकर की इस टीका में भी उनमें से अधिकांश लक्षणों का उल्लेख अपनी विशेष टिप्पणियों में किया है। कुछ लक्षण उन लक्षणों से इतर भी हैं। त्रिष्टुप् के अर्न्तगत उपचित्र, कुपुरुषजनिता, अनवसिता, वेतिका के लक्षण दिए हैं। जगती के अन्तर्गत दिए गउ लक्षण इस प्रकार हैं - ननररघटिता तु *मंदाकिनी*। *ललितम*भिहितं नौ म्रौ नामतः। जभौ जरौ वदति *पञ्चचामरम्*। त्यौ त्याविति निर्दिष्टा *पुष्पविचित्रा*। *द्रुतपद*ं भवति नभनयाश्चेत्। नयुगरगयुगलं च *गौरी* मता। पञ्चमुनि म्भौ सात् सयुता *ललना*।

अतिजगती जाति के भेदों में दिए गए लक्षण इस प्रकार हैं- *उपस्थितमिदं* ज्सौ त्सौ सगुरुको चेत्। यमौ रौ विख्याता *चञ्चरीकावली* गः। ऋतुमुनियति*विद्युन्*ननौ तौ गुरुः। जतौ जसौ गो भवति *मञ्जुहासिनी*। शक्करी जाति में जो भेदों के लक्षण प्रस्तुत किए हैं वे लक्षण छन्दोमञ्जरी की टिप्पणियों में भी नहीं हैं। 'इन्दुवदना भजसनैः सगुरुयुग्मैः। द्विसप्तच्छिलोला म्सौ म्भौ गौ चरणे चेत्। नरनरैलगौ च रचितं सुकेशम्। नजभजगैर्गुरुश्च वसुषट् कुमारी। सजसा यलौ गिति शरग्रहैर्मञ्जरी। नजभजला गुरुश्च भवति प्रमदा। त्रिननगगिति वसुयतिसुपवित्रम्। ननतजगुरुगैः सप्तयतिर्नदी स्यात्।'

इसी तरह अतिशक्करी जाति में इसी प्रकार के कुछ छन्दों के लक्षण प्रस्तुत किए गए हैं- 'चन्द्रलेखाभिदा रौ म्यौ यो विरामः स्वराष्ट्रौ। ननतभरकृताङ्गैः स्वरैरूपमालिनी। चित्रा नाम छन्दो यस्यांस्युस्त्रयो मास्ततो यो। रान्नभद्वितयरैरुदितं रमणीयकम्। भवतः सजौ सजयुतौ वृषभस्ततोयः।'

अष्टिजाति और अत्यष्टिजाति के उन भेदों के लक्षण भी प्रस्तुत किए हैं जिनके लक्षण वृत्तरत्नाकर में उपलब्ध नहीं होते। अष्टिजाति के अन्तर्गत उल्लिखित लक्षण इस प्रकार हैं-

चित्रसंज्ञकमिरितं रजौ रजौ रगौ च वृत्तम्।
पञ्चभकारयुताश्वगतिर्यदि चान्त्यगुरुः।
संकथितामरौनरनगाश्च धीरललिता।
नजभभमेन गेन च स्यान्मणिकल्पता।'

अत्यष्टिजाति के उल्लिखित लक्षण इस प्रकार हैं-

रसयुग हय युङ् नौ म्रौ सौ लगौ हि यदा हरिः।
भवेत्कान्ता युगरसहयैर्यभौ नरसा लगौ।
ससजा भजगा गुदिक्स्वरैर्भवति चित्रलेखा।
ससजैरतिशायिनी मता भजपरैर्गुरुभ्याम्।

धृति के-

मात्सो जौ भरसंयुतो करिवाणकैर्हरिणप्लुत्।
यदि हनयुगलं ततो वेदरेफैर्महामालिका।
ताश्वगतिर्यदि चान्तसरचिता।
सुधास्तर्कैस्तर्कैर्भवति ऋतुभिर्यो मो नसतमाः।
वर्णाश्चैर्मननततमकैः कीर्तिता चित्रलेखेयम्।
भाद्रनता नसौ भ्रमरपदकमिदमभिहितम्।
शार्दूलं वद मासषट्कयतिमसौ जसौ रोमश्चेत्।
अर्थैश्चाश्वैर्मभनयरयुगैवृत्तं मतं केशरम्।
म्भौ न्जौ भ्रौ चेच्चलमिदमुदितं युगैर्मुनिभिः स्वरैः।

अतिधृति के अन्तर्गत बिम्बाख्य, मणिमञ्जरी और समुद्रलता के लक्षण दिए हैं।

कृतिजाति के-

रसैरश्वैरश्वैर्यमननततगैर्गेनशोभेयमुक्ता।
ख्याता पूर्वैः सुवशा यदि भरभनास्तद्वयं गौ गुरुश्च।

प्रकृतिजाति के-

सलिलनिधिर्भवेदिह नजौ भगणौजगणास्त्रयश्चरः।
भवति नजौ हि सिद्धिरितिभाज्जजजा यदि रो भवति।

आकृतिजाति के-

सप्तभकारकृता वसितौ सगुरुः कविभिः कथिता मदिरा।
भौमभभाश्च भरौ यदि कीर्तय पुत्रकमत्तविलासिनीम्।

अर्धसमवृत्तप्रकरण में उपचित्रा छन्द का लक्षण देने के साथ ही इन्होंने पाद टिप्पणियों में पाँच दण्डकों मत्तमात्तंगलीलाकर, अनङ्गशेखर, अशोकमञ्जरी, कुसुमस्तवक और सिंहविक्रान्त के लक्षण प्रस्तुत किए हैं। अनङ्गशेखर, और कुसुमस्तवक दण्डक 'छन्दोमञ्जरी' ग्रन्थ में प्रयुक्त हुए हैं जबकि मत्तमात्तंगलीलाकर, अशोकमञ्जरी और सिंहविक्रान्त को डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी ने अपनी छन्दोमञ्जरी की व्याख्या में अन्य संस्करणों से प्रक्षिप्त माना है।

विषमवृत्तों के लक्षणों के पाँचवें अध्याय में पाद टिप्पणियों में इन्होंने ललिता, षट्पदाख्या, मृगीयवानी, कौमुदी, मञ्जुसौरभ और मालभारिणीय के लक्षण प्रस्तुत किए हैं। इन्हें भी 'छन्दोमञ्जरी' के व्याख्याकार ने अन्य संस्करणों से प्रक्षिप्त ही माना है।

गाथा छन्द के लक्षणों और उदाहरणों को प्रस्तुत करने के लिए भी इन्होंने पाद टिप्पणियों का सहयोग लिया है। यहाँ दिए गए लक्षण इस प्रकार हैं-

- कुड्मलदन्ती भतनगगा स्यात्,
- वरतनुरत्र नजौ जरौ तदा।। स्वकृत।।
- कनकप्रभा यदि सजौ सजौ गुरुः,
- शैलशिखाभरौ नभभगा कथितेह तदा।
- ससजा भजगाऽतिशायिनीयदि च दिक्स्वरागः,
- रसैषड्भिर्लोकैर्यमनसररा,गो भवेद्विस्मिताख्या।
- नजभजजा जरौ,धृतपुरा कथिता, गमुनिस्वराश्रियः,
- यदि भवति ननौ च गौरी ररौ।
- सौ जजौ यदि चाष्टदिग् विरतिर्भरौ विवुधप्रिया,
- भ्तौ ललना न्सा विषुमुनिविरतिः।
- यदिकुटिलगतिर्नावगर्तुस्ततौ ग्।
- दशवसुयतिरीरितं चेद्धिनौ राश्च नाराचकम्।

इसी प्रकार अन्य- वरसुन्दरी, कुटिला, जलधरमाला, वरयुवती, अवितथादि गाथा समझें।

वृत्तरत्नाकर के छठें अध्याय में प्रस्तार आदि छः प्रत्ययों को प्रदर्शित किया गया है। पं. चन्द्रमणि द्वारा प्रस्तारविधि के उक्ता, अत्युक्ता, मध्या आदि भेदों को मञ्जूषा बनाकर बड़े ही सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है। नष्ट, उदिष्ट, एकद्वयादिलगक्रिया, संख्या, अध्वयोग आदि को भी मञ्जूषा तथा प्रश्नोत्तरात्मक तरीके से स्पष्ट किया है।

छन्दों का नामकरण

पं. चन्द्रमणि वृत्तरत्नाकर पर मात्र सुगमा और सरला नामक टीकाएं लिखकर ही अपने दायित्व से मुक्त नहीं हुए अपितु उन्होंने कुछ लक्षणों को प्रस्तुत करके उनका नामकरण भी किया। तृतीय अध्याय में जातियों के अनेकानेक भेदों के परिगणन के साथ-साथ कुछ भेदों के लक्षणों को प्रस्तुत करना इस टीका की सबसे बड़ी विशेषता है। उससे भी बड़ी विशेषता इन लक्षणों के नामकरणों से सम्बन्धित है। ऐसे जो कुछ विशेष लक्षण जा इन्होंने बनाए

हैं तथा विशेष टिप्पणियों में जिनका उल्लेख है उनमें से कुछ एक के नामकरण इनके द्वारा अपने परिवार के सदस्यों के नाम पर किए गए हैं।

अनुष्टुप् जाति के इक्यावनवें भेद का लक्षण इन्होंने इस प्रकार किया है- 'सोमदत्तो रभगा गः।।' वृहती जाति के 512 भेदों में 'कान्ता मो जरौ हिमप्रभा।।' को भी एक भेद का लक्षण बनाया गया है। पंक्ति जाति के 1024 भेदों में से 165वें भेद का लक्षण इस प्रकार है-'दुर्गाप्रसादस्ततौ रतौ स्यात्।।' त्रिष्टुप् जाति के 2048 भेदों में एक भेद का लक्षण इन्होंने इस प्रकार किया है- 'सावित्रीमाता हिमतनलगाः।' किया है। इसी जाति के अन्तर्गत एक अन्य लक्षण जिसे बीसवें क्रम में रखा गया है- 'यदिसाद्भौ भवेद्गौ नित्यानन्दः।' जगतीजाति के4096 भेदों मे से गंगावती है जिसका लक्षण इस प्रकार है-'गंगावती वेद तैः संगता स्याच्च।।' प्रकृतिजाति के के एक भेद का लक्षण –

'शेखररामो यदि भतनया पञ्चरसदशयतिर्नौमः।
यदि सौमौ तमौ यावश्वाश्वाश्वैर्विरामः पूर्णभद्राख्यवृत्तम्।

प्रस्तुत लक्षणों में प्रयुक्त सोमदत्त, हिमप्रभा, दुर्गाप्रसाद, सावित्री, नित्यानन्द, गंगावती, शेखरराम और पूर्णभद्र आदि ऐसे नाम हैं जो इनके परिवार से सम्बद्ध हैं।

'संस्कार-सूर्योदयः (प्रथम भाग)' के प्रारम्भ में जिनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया है उनमें पं. नित्यानन्द शर्मा (भ्राता), पं. दुर्गाप्रसाद शर्मा (भ्राता), गंगादेवी(निजधर्मपत्नी स्वर्गीया) का उल्लेख है। 'संस्कार-सूर्योदयः (तृतीय भाग)' में पृष्ठ १९९-२०० में वंशानुकीर्तनम् में इन्होंने अपने निवास और वंश के वर्णन में इन्होंने इन नामों का उल्लेख किया है-

त्रैगर्ते खलु काङ्गडा सुविषये कौण्डिन्य गोत्रोद्भवः
आसील्लंघुपुरे गिरीशपदकञ्जार्चाप्रसक्तः शिवः।
पुत्राः सन्तिवरास्त्रयोगुणयुताः श्रीसोमदत्तोग्रजः
शास्त्रार्थे निपुणो धीर्बुधगणे श्रीशेषरामोनुजः।।
संस्कारादिक कर्मकाण्डकुशलः श्रीपूर्णभद्रोनुजः
नित्यानन्दविधिज्ञवाक्यपटुतरः स्तो द्वौ सुतावाद्यजौ।
स्वर्यातः सुखराजपण्डितवरः सर्वाधिकशास्त्रवित्
देशेस्मिन् खलु मध्यमस्तनयो दुर्गाप्रसादाभिधः।।
दासश्चन्द्रमणिः समस्तविदुषां ज्ञेयः कनिष्ठोद्भवः
सावित्रीजननी सुतो यदुपतिर्वज्रेश्वरीबालिका।
गंगानामसती प्रियासुखकरी सा प्रेयसी मामकी
वामाङ्गी तु हिमप्रभा(हीमा) पतिरतो द्वाहवे द्वितीयेप्रिया।।

'सर्वव्रतोद्यापनचन्द्रिका' के मंगलाचरण में भी वे इन नामों का परिगणन करते हैं।

वन्दे तारां महाकालीं गणेशं गिरिजां शिवम्।
लक्ष्मीं विष्णुं विधातारं सावित्रीं च सरस्वतीम्।।
श्रीसोमदत्तं शेषरामं पूर्णभद्रं पितृंस्तथा।
सावित्रीं पार्वतीं लक्ष्मीं मातृश्चन्द्रः कृताञ्जलिः।।

नित्यानन्दं सुखराजं दुर्गाप्रसादमग्रजान्।
भ्रातृजायां हृदिस्वेष्टान् गुरुणां चरणम्बुजान्।।
कुर्वे मोदाय सर्वेषां व्रतोद्यापनचन्द्रिकाम्।
नोदिता पद्मनाभेन पौर्णभद्रिरविस्तराम्।।

इस पुस्तक के २१० वें पृष्ठ पर इन्होंने अपना वंशवृक्ष दिया हुआ है। उसमें भी इन समस्त नामों का परिगणन है। जहां इन्होंने अपनी पहली पत्नी का नाम गंगावती और दूसरी का नाम हिमप्रभा ही लिखा है। छन्दों में भी इन्हीं नामों को व्यवहृत किया गया है। शेखरराम छन्द शेषराम का ही एक अन्य रूप है।

सोमदत्त और शेखरराम छन्द इन्होंने अपने पिता के बड़े भाइयों के नाम पर और पूर्णभद्र छन्द का नामकरण इन्होंने अपने पिता के नाम किया। सावित्री छन्द का नामकरण इन्होंने अपनी माता के नाम किया। इसी प्रकार हिमप्रभा, गंगावती नामक छन्दों का नामकरण इन्होंने अपनी धर्मपत्नियों के नाम पर किया। दुर्गाप्रसाद और नित्यानन्द छन्दों का नामकरण इन्होंने अपने भाइयों के नाम पर किया।

पांचवें अध्याय में गाथा छन्द के कुछ उदाहरण भी इनके द्वारा बनाए गए हैं। 'वरतनुरत्र नजौ जरौ तदा।। स्वकृत।।' यहाँ स्वकृत का भी प्रयोग किया है। इसके साथ ही परिशिष्ट भाग में प्रकारन्तरेण नष्टप्रत्ययः, मेरुप्रस्तार, वृत्ताक्षरजातिसोपानम्, मात्राकदज्ञापकचक्रम् और पताका विधि का मञ्जूषाओं के साथ प्रदर्शन किया है जिससे इनकी दुर्बोधता समाप्त हुई है। साथ ही मगणदिबोधकचक्र भी दिया है। जिसमें गणों के स्वरुप, देवता, फल, मित्रादि, शुभाशुभ को प्रदर्शित किया है। विराम (यति) विचार द्वारा नवीन विराम चिह्नों के सन्दर्भ में जानकारी दी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. उपाध्याय पं. चन्द्रमणि, प्र. सं. 1990 वि. सं., संस्कार-सूर्योदयः (प्रथमभाग), द्वारका प्रिटिंग प्रेस, लाहौर,
२. उपाध्याय, पं. चन्द्रमणि शर्मा, द्वि. सं. 2000 वि., संस्कार-सूर्योदयः (तृतीयभाग), पं. पद्मनाभजी शर्मा, संस्कृत पाठशाला नेरटी, जिलाः काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश.
३. उपाध्याय, पं. चन्द्रमणि शर्मा, प्र. सं. 1937 वि. सं., वृत्तरत्नाकर, भारद्वाज पुस्तकालय, हस्पताल रोड, लाहौर.
४. उपाध्याय, पं. चन्द्रमणि शर्मा, प्र. सं. 1996 ई., सर्वव्रतोद्यापन-चन्द्रिका, पं. पद्मनाभजी शर्मा, प्रधानाध्यापक, संस्कृत पाठशाला नेरटी, जिला-काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश.
५. केदार भट्ट (लेखक), उपाध्याय, आचार्य बलदेव (व्याख्याकार), द्वि. सं. 1989 ई., वृत्तरत्नाकर, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी.
६. गंगादास (लेखक), त्रिपाठी डा. ब्रह्मानन्द (व्याख्याकार), द्वि. सं. 1983 ई., छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी.
७. शास्त्री, मथुरानाथ (संपादक), प्र. सं. 2020 वि. सं., वृत्तमुक्तावली, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, राजस्थान.